https://www.uokonline.com

This question paper contains 24 printed pages]

459 to 462

M.A. (Final) Examination, 2020

HINDI LITERATURE

Paper V

विशेष कवि : (1) तुलसीदास

अथवा

विशेष कवि : (2) प्रेमचन्द

अथवा

(3) हिंदी नाटक और रंगमंच

अथवा

विशेष कवि : (4) जयशंकर प्रसाद

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

This question paper contains ***three*** *sections as under :*

खण्ड 'अ' ***Max. Marks-10***

इस खण्ड में एक अनिवार्य प्रश्न है जिसमें ***10*** *भाग हैं। प्रत्येक भाग का उत्तर लगभग* ***20*** *शब्दों से अधिक न हो।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

https://www.uokonline.com

खण्ड 'ब' ***Max. Marks-50***

इस खण्ड में ***10*** *प्रश्न हैं। प्रत्येक इकाई से* ***एक*** *प्रश्न का चयन करते हुए, कुल* ***5*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर* ***250*** *शब्दों से अधिक न हो।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड 'स' ***Max. Marks-40***

इस खण्ड में ***4*** *प्रश्न हैं (प्रश्नों के उपभाग हो सकते हैं)। इस खण्ड में एक इकाई से अधिकतम* ***एक*** *प्रश्न होगा। प्रश्न संख्या* ***12*** *(इस खण्ड का प्रथम प्रश्न) अनिवार्य होगा शेष* ***03*** *प्रश्नों में से* ***01*** *प्रश्न का उत्तर दिया जाना है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर* ***500*** *शब्दों से अधिक न हो।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

विशेष कवि : (1) तुलसीदास

खण्ड-अ

1. (*i*) 'रामचरितमानस' में कितने काण्ड हैं ? नाम बताइये।

   (*ii*) रामचरितमानस का महत्व आज किस कारण से है ?

   (*iii*) तुलसीदास की किस रचना में उनके जीवन से संबंधित वृतान्त अधिक हैं ?

   (*iv*) ज्ञान-भक्ति का विशद विवेचन मानस के किस काण्ड में हुआ है ?

https://www.uokonline.com

(v) राम के बाल रूप की झांकी किस ग्रन्थ में सर्वाधिक है ?

(vi) तुलसीदास ने कौनसी रचना 'कलिकाल' से मुक्ति पाने हेतु लिखी ?

(vii) 'विनयपत्रिका' में तुलसी ने पहली प्रार्थना किसकी की है ?

(viii) 'सुन्दरकाण्ड' में राम के किस भक्त का वर्णन है ?

(ix) 'गीतावली' में प्रयुक्त रागों में से किसी **एक** राग का उल्लेख कीजिए।

(x) 'रामचरितमानस' तथा 'गीतावली' की भाषा बताइये।

खण्ड-ब

नोट :– प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न कीजिए।

इकाई-I

2. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥

बहुरि सोच बस भे सियरबनू। कारन कवन भरत आगवनू॥
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितुबद्ध इत बंधु संकोचू॥
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभु चितहित थिति पावत नाहीं॥
समाधान तब भा यह जाने। भरतु कहे महुँ साधु सयाने॥
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ स्वभारू। कहत समय सम नीति बिचारू॥
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं। सेवकु समय न ढीठ दिठाई॥
तुम्ह सर्वग्य सिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउँ अनुगामी॥

3. "अयोध्याकाण्ड में कवि तुलसीदास ने व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है।" सिद्ध कीजिए।

इकाई-II

4. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥
प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥
गरल सुधा रिपु करहि मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥

https://www.uokonline.com

https://www.uokonline.com

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा॥

गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति विचित्र कहि जात सो नाहीं॥

सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि वैदेही॥

भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥

5. 'सुन्दरकाण्ड' का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

इकाई-III

6. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

ऐसो को उदार जग माहीं।

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोऊ नाहीं॥

जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी।

सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी॥

जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहँ लीन्हीं।

सो संपदा विभीषन कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही॥

तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।

तो भजु राम, काम सब पूरन करहिं कृपानिधि तेरो॥

7. ''तुलसी की 'विनयपत्रिका' उत्कृष्ट गीतिकाव्य है।'' सिद्ध कीजिए।

https://www.uokonline.com

इकाई-IV

8. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,

बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।

जीविका-विहीन लोग सीद्यमान, सोचबस,

कहैं एक एकन सौं, कहाँ जाई, का करी ?'

वेद हूँ पुरान कही, लोकहू बिलोकियत,

सांकरे समै पै राम रावरे कृपा करी।

दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !

दुरित-दहन देखि 'तुलसी' हहा करी॥

9. काव्यरूप की दृष्टि से 'कवितावली' की समीक्षा कीजिए।

इकाई-V

10. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

माई री! मोहि कोउ न समुझावै।

राम-गवन साँचो किधौं सपनो, मन परतीति न आवै॥

लगेइ रहत मेरे नैननि आगे राम-लखन अरु सीता।

तदपि न मिटत दाह या उर को, विधि जो भयो विपरीता॥

https://www.uokonline.com

दुख न रहै रघुपतिहि बिलोकत, तनु न रहै बिनु देखे।

करत न प्रान पयान, सुनहु, सखि! अरुझि परी यहि लेखे॥

कौसल्या के बिरह-बचन सुनि रोइ उठीं सब रानी।

तुलसीदास रघुवीर-बिरह की, पीर न जाति बखानी॥

11. 'गीतावली' के गीतों की भाव-सम्पदा को विश्लेषित कीजिए।

खण्ड-स

12. "'रामचरितमानस' तुलसी की कालजयी कृति है"—इस कथन के आधार पर मानस की काव्यगत तथा सामाजिक विशेषताएँ प्रतिपादित कीजिए।

13. "भक्ति रस का पूर्ण परिपाक जैसा 'विनयपत्रिका' में देखा जाता है वैसा अन्यत्र नहीं।" इस कथन के आधार पर तुलसी की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए।

14. 'कवितावली' के उत्तरकाण्ड के आधार पर सामाजिक चेतना एवं युग-दर्शन पर प्रकाश डालिए।

15. 'गीतावली' की रचना का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

https://www.uokonline.com

अथवा

विशेष कवि : (2) प्रेमचन्द

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 20 शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

   (*i*) "आजकल धर्म तो धूर्तों का अड्डा बना हुआ है। इस निर्मल सागर में एक से एक मगरमच्छ पड़े हुए हैं।" 'सेवासदन' में यह कथन किसके द्वारा कहा गया है ?

   (*ii*) 'सेवासदन' उपन्यास के अनुसार प्राचीन ऋषियों ने इन्द्रियों को दमन करने के दो साधन बताये हैं— वे दो साधन कौन-कौनसे हैं ? लिखिए।

   (*iii*) जालपा की माँ का क्या नाम था ? लिखिए।

   (*iv*) जालपा अपनी माँ द्वारा भेजे गये हार को क्यों लौटा देना चाहती थी ? कारण बताइए।

   (*v*) "पसीने की कमाई खाने वालों का दिवाला नहीं निकलता।" 'रंगभूमि' उपन्यास में यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है ?

https://www.uokonline.com

(*vi*) 'रंगभूमि' उपन्यास में मनुष्य जीवन के तीन तत्त्व कौन-कौनसे बतलाये गये हैं ? लिखिए।

(*vii*) प्रेमचंद उपन्यास का मूल तत्व किसे मानते हैं ?

(*viii*) 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध के अनुसार साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा क्या है ? लिखिए।

(*ix*) ''बुढ़िया का क्रोध तुरन्त ही स्नेह में बदल गया।'' 'ईदगाह' कहानी में क्रोध का स्नेह में बदलने का कारण लिखिए।

(*x*) 'पूस की रात' कहानी के दो प्रमुख पात्रों के नाम लिखिए।

खण्ड-ब

इकाई-I

सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2. आप जैसे सहृदय मनुष्य से मुझे ऐसी निर्दयता की आशा न थी। आप चाहे समझते हों कि आदर और सम्मान की भूख बड़े आदमियों को ही होती है, किन्तु दीन दशा वाले प्राणियों को इसकी भूख और भी अधिक होती है, क्योंकि उनके पास इसे प्राप्त करने का कोई साधन नहीं होता। वे इसके लिए चोरी, छल-कपट सब कुछ कर बैठते हैं। आदर में वह संतोष है जो धन और भोग-विलास में भी नहीं है। मेरे मन में यही चिन्ता रहती थी कि यह आदर कैसे मिले। इसका उत्तर मुझे कितनी ही बार मिला, लेकिन आपके होली वाले जलसे के दिन जो उत्तर मिला, उसने भ्रम दूर कर दिया।

https://www.uokonline.com

3. अगर जिंदा रहा तो देखूँगा कि यूरोप का पौधा यहाँ कैसे-कैसे फल लाता है ? हमारे पूर्वजों ने खेती को सबसे उत्तम कहा है, लेकिन आजकल यूरोप की देखा-देखी लोग मिल और मशीनों के पीछे पड़े हुए हैं। मगर देख लेना, ऐसा कोई समय आयेगा कि यूरोप वाले स्वयं चेतेंगे और मिलों को खोद-खोदकर खेत बनायेंगे। स्वाधीन कृषक के सामने मिल के मजदूरों की क्या हस्ती ? वह भी कोई देश है, जहाँ बाहर से खाने की वस्तु न आयें तो लोग भूखों मरें। जिन देशों में जीवन ऐसे उलटे नियमों पर चलाया जाता है, वह हमारे लिए आदर्श नहीं बन सकते।

इकाई-II

4. अगर इस समय किसी को संसार में सबसे दुखी, जीवन से निराश, चिन्ताग्नि में जलते हुए प्राणी की मूर्ति देखनी हो तो उस युवक को देखे, जो साइकिल पर बैठा हुआ अल्फ्रेड पार्क के सामने चला जा रहा है। इस वक्त अगर कोई काला सांप नजर आये, तो वह दोनों हाथ फैलाकर उसका स्वागत करेगा और उसके विष को सुधा की तरह पियेगा। उसकी रक्षा सुधा से नहीं, अब विष ही से हो सकती है। मौत ही अब उसकी चिंताओं का अंत कर सकती है।

https://www.uokonline.com

5. आपका अन्त:करण इतना मलिन हो गया है कि स्त्री-पुरुष को एक जगह देखकर आप सन्देह किए बिना रह ही नहीं सकते, पर जहाँ लड़के और लड़कियाँ एक साथ शिक्षा पाते हैं, वहाँ यह जाति-भेद बहुत महत्व की वस्तु नहीं रह जाता। आपस में स्नेह और सहानुभूति की इतनी बातें पैदा हो जाती हैं कि कामुकता का अंश बहुत थोड़ा रह जाता है। यह समझ लीजिए कि जिस देश में स्त्रियों को जितनी अधिक स्वाधीनता है, वह देश उतना ही सभ्य है। स्त्रियों को कैद में, परदे में, या पुरुषों से कोसों दूर रखने का तात्पर्य यही निकलता है कि आपके यहाँ जनता इतनी आचारभ्रष्ट है कि स्त्रियों का अपमान करने में जरा भी संकोच नहीं करती। युवकों के लिए राजनीति, धर्म, ललित कला, साहित्य, दर्शन, इतिहास, विज्ञान और हजारों ही ऐसे विषय हैं जिनके आधार पर वे युवतियों से गहरी दोस्ती पैदा कर सकते हैं। कामलिप्सा उन लोगों के लिए आकर्षण का प्रधान विषय है जहाँ लोगों की मनोवृत्तियाँ संकुचित रहती हैं।

इकाई-III

6. "स्त्री-पुरुष में पवित्र प्रेम होना असंभव है। प्रेम पहले उंगली पकड़कर तुरन्त ही पहुंचा पकड़ता है। यह भी जानती हूँ कि यह प्रेम मुझे ज्ञान के ऊँचे आदर्शों से गिरा रहा है। हमें जीवन

इसलिए प्रदान किया गया है कि सद्विचारों और सद्कार्यों से उसे उन्नत करें और एक दिन अनन्त ज्योति में विलीन हो जायें। यह भी जानती हूँ कि जीवन नश्वर है, अनित्य है और संसार के सुख भी अनित्य और नश्वर हैं। यह सब जानते हुए भी पतंग की भांति दीपक पर गिर रही हूँ। इसीलिए तो कि प्रेम में वह विस्मृति है, जो संयम, ज्ञान और धारणा पर परदा डाल देती है।

7. मृत्यु तो केवल पुनर्जीवन की सूचना है, एक उच्चतर जीवन का मार्ग। विनय फिर संसार में आएगा, उसकी कीर्ति और भी फैलेगी। जिस मृत्यु पर घर वाले रोयें, वह भी कोई मृत्यु है। वह तो एड़ियाँ रगड़ना है। वीर मृत्यु वही है, जिस पर बेगाने रोएँ और घरवाले आनंद मनाएँ। दिव्य मृत्यु दिव्य जीवन से कहीं उत्तम है। दिव्य जीवन में कलुषित मृत्यु की शंका रहती है, दिव्य मृत्यु में यह संशय कहाँ ? कोई जीव दिव्य नहीं है, जब तक उसका अंत भी दिव्य न हो।

इकाई-IV

8. हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा—कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे। आठ चिलम तो पी चुका। यह

https://www.uokonline.com

खेती का मजा है। और एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गरमी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कंबल। मजाल है, जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें।

9. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

इकाई-V

सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

10. ''दुनिया में मानव जाति के कल्याण के जितने आंदोलन हुए हैं, उन सभी के लिए साहित्य ने ही जमीन तैयार की है, जमीन ही नहीं तैयार की, बीज भी बोए और उसकी सिंचाई भी की। साहित्य राजनीति के पीछे चलने वाली चीज नहीं, उसके आगे-आगे चलने वाला 'एडवांस गार्ड' है। वह उस विद्रोह का नाम है जो मनुष्य के हृदय में अन्याय, अनीति और कुरुचि से होता है। लेखक अपनी कोमल भावनाओं के कारण उस विद्रोह की जबान बन जाता है और लोगों के दिलों पर भी चोट लगती है, पर अपनी व्यथा को, अपने दर्द को, दिल हिला देने वाले शब्दों में जाहिर नहीं कर सकते। साहित्य का स्रष्टा उन चोटों को हमारे दिलों पर इस तरह अंकित करता है कि हम उनकी तीव्रता को सौगुने वेग के साथ महसूस करने लगते हैं।

11. सत्य को रसों द्वारा हम जितनी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, ज्ञान और विवेक द्वारा नहीं कर सकते। उसी भाँति जैसे

दुलार-पुचकार कर बच्चों को जितनी सफलता से वश में किया जा सकता है, डाँट-फटकार से संभव नहीं है। कौन नहीं जानता कि प्रेम से कठोर से कठोर प्रकृति को नरम किया जा सकता है। जहाँ ज्ञान और उपदेश असफल होता है, वहाँ साहित्य बाजी ले जाता है। यही कारण है कि हम उपनिषदों और अन्य धर्म-ग्रंथों को साहित्य की सहायता लेते देखते हैं। हमारे धर्माचार्यों ने देखा कि मनुष्य पर सबसे अधिक प्रभाव मानव-जीवन के दुख-सुख के वर्णन से ही हो सकता है और उन्होंने मानव-जीवन की वे कथाएँ रचीं, जो आज भी हमारे आनंद की वस्तु हैं।

खण्ड-स

12. ''रंगभूमि के नारी पात्रों में जाह्नवी का चरित्र एक वीर माता और देशभक्त नारी का चरित्र है।'' इस कथन के आलोक में जाह्नवी का चरित्रांकन कीजिए।

13. प्रेमचंद के निबंध 'राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी समस्याएँ' में व्यक्त विचारों को स्पष्ट कीजिए।

14. 'सेवासदन' उपन्यास में भारतीय नारी की निस्सहायता, पराधीनता और पशुओं जैसी स्थिति का यथार्थ वर्णन हुआ है।'' इस कथन के आलोक में 'सेवासदन' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए।

15. 'गबन' उपन्यास की नायिका जालपा का सोदाहरण चरित्र-चित्रण कीजिए।

https://www.uokonline.com

https://www.uokonline.com

अथवा

(3) हिंदी नाटक और रंगमंच

खण्ड-अ

1. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं :

(*i*) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक 'अंधेर नगरी' में कितने दृश्य हैं ?

(*ii*) 'अंधेर नगरी' किसका प्रतीक है ?

(*iii*) जयशंकर प्रसाद के किन्हीं **चार** नाटकों के नाम लिखिए।

(*iv*) 'अजातशत्रु' नाटक का मुख्य प्रतिपाद्य लिखिए।

(*v*) 'आधे-अधूरे' नाटक के मुख्य पात्र का नाम लिखिए।

(*vi*) मोहन राकेश के नाटकों के नाम लिखिए।

(*vii*) 'आठवाँ सर्ग' नाटक का आधार ग्रन्थ कौनसा है ?

(*viii*) 'आठवाँ सर्ग' की मूल संवेदना लिखिए।

(*ix*) 'हानूश' के अतिरिक्त भीष्म साहनी के किन्हीं दो नाटकों के नाम लिखिए।

(*x*) 'हानूश' का मूल कथ्य क्या है ?

खण्ड-ब

इकाई-I

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

चूरन अमल बेद का भारी। जिसको खाते कृष्ण मुरारी॥
मेरा पाचक है पचलोना। जिसको खाता श्याम सलोना॥
चूरन बना मसालेदार। जिसमें खट्टे की बहार॥
मेरा चूरन जो कोई खाय। मुझको छोड़ कहीं नहिं जाय॥
हिन्दू चूरन इसका नाम। विलायत पूरन इसका काम॥

अथवा

3. हाय! मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी ने कहा था ऐसे नगर में न रहना चाहिए, यह मैंने न सुना! अरे, इस नगर का नाम ही अंधेर नगरी और राजा का नाम चौपट्ट है, तब बचने की कौन आशा है! अरे! इस नगर में ऐसा कोई धर्मात्मा नहीं है जो इस फकीर को बचावै। गुरुजी! कहाँ हो ? बचाओ गुरुजी, गुरुजी .....।

https://www.uokonline.com

इकाई-II

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क्षणिक विश्व का यह कौतुक है देवि! अब तुम अग्नि से तपे हुए हेम की तरह शुद्ध हो गयी हो। विश्व के कल्याण में अग्रसर हो। असंख्य दुखी जीवों को हमारी सेवा की आवश्यकता है। इस दु:ख समुद्र में कूद पड़ो। यदि एक भी रोते हुए हृदय को तुमने हँसा दिया, तो सहस्रों स्वर्ग तुम्हारे अन्तर में विकसित होंगे। फिर तुमको पर-दु:ख-कातरता में ही आनन्द मिलेगा। विश्व मैत्री हो जायेगी—विश्वभर अपना कुटुम्ब दिखाई पड़ेगा। उठो, असंख्य आहें तुम्हारे उद्योग से अट्टहास में परिणत हो सकती हैं।

अथवा

5. "बिम्बसार का चरित्र आर्य राजाओं का गौरवपूर्ण चरित्र है।" इस कथन को ध्यान में रखते हुए बिंबसार की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

इकाई-III

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

अपनी जिन्दगी चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। तुम्हारी जिन्दगी चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। इन सबकी जिन्दगियाँ चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। फिर भी मैं इस घर से चिपका हूँ क्योंकि अन्दर से मैं आरामतलब हूँ, घर-घुसरा हूँ, मेरी हड्डियों में जंग लगा है।

अथवा

7. "'आधे-अधूरे' एक समस्या-प्रधान नाटक है।" इस कथन पर अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।

इकाई-IV

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जीवन के एक मोड़ पर सत्ता की आवश्यकता थी ..... अब नहीं है।.....(ठहरकर) अब ?..... अगर शासन मेरी रचना पर यहाँ रोक लगायेगा, तो वह दूसरे राज्य में सप्तम सुर में सुनी जायेगी। मुझे बन्दीगृह में डाल देगा, तो संकीर्ण बुद्धि और कुटिल मन कहलायेगा। और अगर मेरी हत्या कर देगा, तो लोकमत उसके विरुद्ध आषाढ़ के पहले काले कजरारे मेघों के समान भड़क उठेगा।

https://www.uokonline.com

अथवा

9. 'आठवां सर्ग' नाटक में व्यक्त वैयक्तिक एवं सामाजिक चेतना को समझाइये।

इकाई-V

10. रंगमंच एवं अभिनेयता की दृष्टि से 'हानूश' नाटक की समीक्षा कीजिए।

अथवा

11. 'हानूश' नाटक का उद्देश्य क्या है ? क्या रचनाकार अपने उद्देश्य में सफल रहा है ? स्पष्ट कीजिए।

खण्ड-स

12. " 'अंधेर नगरी' युग जीवन को चित्रित करने वाला एक सार्थक नाटक है।" इस कथन पर विचार करते हुए, नाटकीय तत्वों के आधार पर 'अंधेर नगरी' की समीक्षा कीजिए।

13. "प्रसाद जी अतीत के कथानक में वर्तमान युग की समस्याओं के समाधान तलाशते हैं।" इस कथन को ध्यान में रखते हुए 'अजातशत्रु' नाटक की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

14. " 'आधे-अधूरे' नाटक जीवन के एक गहन अनुभव-खण्ड को यथार्थ के धरातल पर मूर्त करता है।" इस कथन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

15. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) जयशंकर प्रसाद की नाट्यकला

(ख) भीष्म साहनी के नाटक

(ग) आठवां सर्ग की कथावस्तु

(घ) 'अंधेर नगरी' की प्रतीक-योजना।

अथवा

विशेष कवि : (4) जयशंकर प्रसाद

खण्ड-अ

1. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

(*i*) 'कामायनी' महाकाव्य के किन्हीं 10 सर्गों के नाम लिखिये।

(*ii*) 'कामायनी' की कथा का मुख्य आधार किस प्राचीन घटना पर केन्द्रित है ?

(*iii*) 'चन्द्रगुप्त' नाटक का रचनाकाल बताइए।

(*iv*) 'चन्द्रगुप्त' नाटक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(*v*) "काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है, जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है।" यह कथन प्रसाद जी के काव्य की किस विधा से संकलित है ?

(*vi*) 'काव्य कला तथा अन्य निबन्ध' में कितने निबन्ध संकलित हैं ?

https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com

(vii) 'कंकाल' उपन्यास के माध्यम से समाज की किन समस्याओं की ओर लेखक ने इंगित किया है ?

(viii) "कोई समाज स्त्रियों का नहीं बहन! सब पुरुषों के हैं, स्त्रियों का एक धर्म है, आघात सहन करने की क्षमता .....।" उक्त पंक्ति समाज में स्त्री की किस दशा को दर्शाती है ?

(ix) 'ममता' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

(x) 'आकाशदीप' कहानी के नायक एवं नायिका का नाम लिखिए।

खण्ड-ब

इकाई-I

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्त्व की ही प्रधानता—कहो उसे जड़ या चेतन।

अथवा

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

"क्या कहती हो ठहरो नारी! संकल्प-अश्रु-जल से अपने—
तुम दान कर चुकी पहले ही जीवन के सोने-से सपने।

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में,
पीयूष-स्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।

इकाई-II

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती .....
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतन्त्रता पुकारती.....
अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है.....बढ़े चलो, बढ़े चलो।

अथवा

5. रंगमंच की दृष्टि से 'चन्द्रगुप्त' नाटक की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

इकाई-III

6. व्याख्या कीजिए :

वेदना से प्रेरित होकर जन-साधारण के अभाव और उनकी वास्तविक स्थिति तक पहुँचने का प्रयत्न यथार्थवादी साहित्य करता है। इस दशा में प्रायः सिद्धान्त बन जाता है कि हमारे दुःख और कष्टों के कारण प्रचलित नियम और प्राचीन सामाजिक रूढ़ियाँ हैं।

https://www.uokonline.com

https://www.uokonline.com

फिर तो अपराधों के मनोवैज्ञानिक विवेचन के द्वारा यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न होता है कि वे सब समाज की कृत्रिम पाप हैं। अपराधियों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न कर सामाजिक परिवर्तन के सुधार का आरम्भ साहित्य में होने लगता है।

अथवा

7. 'रंगमंच' निबन्ध के आधार पर प्रसादजी की निबन्ध-कला की समीक्षा कीजिए।

इकाई-IV

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जिन्हें आवश्यकता नहीं, उनको बिठाकर आदर से भोजन कराया जाये, केवल इस आशा से कि परलोक में वे पुण्य संचय का प्रमाण-पत्र देंगे, साक्षी देंगे, और इन्हें जिन्हें पेट ने सता रखा है, जिनको भूख ने अधमरा बना दिया है, जिनकी आवश्यकता नंगी होकर वीभत्स नृत्य कर रही है—वे मनुष्य, कुत्तों के साथ जूठी पत्तलों के लिये लड़ें, यही तो तुम्हारे धर्म का उदाहरण है।

अथवा

9. ''कंकाल, समाज की रूढ़िगत धार्मिकता तथा थोथी नैतिकता पर बड़ा गहरा व्यंग्य है।'' इस कथन के आधार पर 'कंकाल' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

https://www.uokonline.com

10. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मनुष्य की चिता जल जाती है, और बुझ भी जाती है परन्तु उसकी छाती की जलन, द्वेष की ज्वाला, सम्भव है, उसके बाद भी धक्-धक् करती हुई जला करे। तारा जिस दिन विधवा हुई, जिस समय सब लोग रो-पीट रहे थे, उसकी ननद ने, भाई के मरने पर भी, रोदन के साथ, व्यंग स्वर में कहा—''अरे मैया रे, किसका पाप किसे खा गया रे।'' तभी आसन्न वैधव्य ठेलकर, अपने कानों को ऊँचा करके, तारा ने वह तीक्ष्ण व्यंग रोदन के कोलाहल में भी सुन लिया था।

अथवा

11. ''ममता'' कहानी की उदाहरण सहित तात्विक समीक्षा कीजिए।

खण्ड-स

12. ''कामायनी कालजयी कृति है।'' इस कथन के आधार पर कामायनी की प्रासंगिकता सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

13. प्रसाद जी के नाटक राष्ट्रीय भावना के साथ-साथ वर्तमान समस्याओं से सरोकार रखते हैं। चन्द्रगुप्त नाटक की विशेषताएँ इस आधार पर बताइए।

14. ''काव्य-कला और अन्य निबंध'' कृति के आधार पर प्रसाद जी के निबन्धों की विशेषताएँ बताइए।

15. ''आकाशदीप'' कहानी की मूल संवदेना बताते हुए इसके शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए।